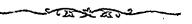
11 30 11

पंचकाश विवेक



गुरुस्तुति

त्रिभंगी छन्द।

(१)

जय जय गुरु खामी, श्रंतर्यामी, सिंचत् श्रानँद् राशी। सचराचर नायक, जन सुखदायक, माया पर श्रविनाशी।। जय करुणा सागर, सब विधि नागर, शरणपाल भगवाना। भक्तन हितकारी, नर तनु धारी, गावत वेद पुराणा।।

(२)

जय भव भय भंजन, नित्य निरंजन, गुणातीत गुणखानी। जय अचल अकामा, पूरण कामा, मानद आप अमानी।। जय कमल विलोचन, संशय मोचन, ब्रह्म रूप जग ब्राता। परिपूरण त्यागी, जन अनुरागी, चारि पदारथ दाता॥

(२)

(३)

जानत सब विद्या, हरत श्रविद्या, श्रकल सकल कल पंडित । निह लेश विषमता, श्रविचल समता, यकरस ज्ञान श्रवंडित ॥ कोमल चित योगी, विषय वियोगी, सुखकर चिंता हर्ता। निज सेवक संगी, सदा श्रसंगी, कर्ता महा श्रकर्ता ॥

(8)

निर्भय भय नाराक, ज्ञान प्रकाराक, सेवत नर वड़ भागी। व्रह्मादिक देवा, करते सेवा, चरण कमल अनुरागी।। प्रभु निश दिन ध्याऊँ, गुणगण गाऊँ, कामादिक हर लीना। यह मन क्रम वाचा, सेवक सांचा, जन अपना कर लीना।।

(4)

पामर अविचारी, मिथ्याचारी, सत्य असत्य न जाने । सुत वित लिपटाने, निपट अयाने, किं सट्गुरु पहिचाने ॥ निहं सट्गुरु चीन्हा, अति ही दीना, लख चौरासि भटकते । गुरुपद चित दीना, परम प्रवीगा, निहं कौशल्य ! अटकते ॥

